15

ELECTIVE

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारहवीं)
परीक्षार्थी प्रवेश–पत्र के अनुसार भरें

विषय Subject : Hindi Elective

विषय कोड Subject Code : 002

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : Friday 11|03|2016

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को दर्शाएं :
Write code No. as written on the top of the question paper :

Code Number	Set Number
29/1	● ② ③ ④

अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या
No. of supplementary answer -book(s) used: Nil

विकलांग व्यक्ति : हाँ / नहीं
Person with Disabilities : Yes / No — No

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं।
If physically challenged, tick the category

B | D | H | S | C | A

B = दृष्टिहीन, D = मूक व बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक
C = डिस्लेक्सिक, A = ऑटिस्टिक
B = Visually Impaired, D = Hearing Impaired, H = Physically Challenged
S = Spastic, C = Dyslexic, A = Autistic

क्या लेखन – लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हाँ / नहीं
Whether writer provided : Yes / No

यदि दृष्टिहीन हैं तो उपयोग में लाए गये सॉफ्टवेयर का नाम :
If Visually challenged, name of software used :

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है, तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

0668615
002/00004

2 3

खण्ड - 'ग'

प्रसंग - यह प्रसंग हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक से ली गई है। यह 'तुलसीदास' द्वारा रचित 'भरत राम का प्रेम' में से ली गई है।

व्याख्या - इस काव्यांश में तुलसीदास जी ने राम की विशेषताओं का उल्लेख किया है। उन्होंने बताया है कि श्री राम बड़े ही संवेदनशील व्यक्ति थे। वे तो अपराधी व्यक्ति तक पर क्रोध नहीं करते हैं। वे अपने भाईओं से बहुत प्रेम करते थे। वे खेल में भी कभी खुनिस नहीं निकालते थे। वे खेल में स्वयं जानबूझ कर हार जाते ताकि भरत जीत जाए और उसका उत्साह बढ़ा रहे। वह कभी नहीं चाहते थे कि उनका भाई निराश हो। उन्होंने कभी भी भरत का मन नहीं दुखाया है। वे हमेशा से ही भाईओं की खुशी चाहते थे। भरत भी उनका सम्मान करता था। उनको देखकर उसकी आँखे पुलकित हो उठती थी। दोनों के बीच में अपहार प्रेम था। श्रीराम को देखकर भरत अच्छे परिणाम की आशा करता था। इससे उनकी श्री राम के प्रति श्रद्धा भाव झलकती है। श्रीराम भी अपने भाइओं के लिए त्याग भावना रखते थे।

विशेष - तुलसीदास जी ने बड़े ही सुन्दर तरीके से इसे पेश किया है। अलंकारों का भी बहुत सुंदर तरीके से इस्तेमाल किया है। 'खेलत - खुनिस', 'मोर मन' में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है। ब्रज भाषा।

का प्रयोग है।

8. (ख) 'कार्नेलिया का गीत' में प्रसाद जी ने बड़े ही सुन्दर तरीके से भारत की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का उल्लेख किया है। उन्होंने भारत की प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ भारत के लोगों के बीच के आपसी प्रेम संबंध का भी उल्लेख किया है। उन्होंने बताया है कि यहाँ जब सूरज की लाल किरणे कमल के पत्तों पर पड़ती है तो यह सुनहरे रंग का होकर मनभावन लगता है। यहाँ चिड़ियाँ भी खुले आसमान में आजाद घूमती है। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य सच में लुभावना है। यह देश सभी को अपना लेता है। यह अनंत समुद्र को भी किनारा देता है। यहाँ के लोग किसी भी अजनबी को अपना लेते है और प्रेम का अहसास दिलाते है। यहाँ के लोगों में आपसी भाई-चारा है। इस तरह से कवि ने भारत की सांस्कृतिक ~~एक~~ एवं ~~प्राकृतिक~~ प्राकृतिक विशेषताओं का ~~वर्णन~~ वर्णन किया है।

(ग) बनारस में वसंत का आगमन बड़े ही अजीब तरीके से होता है। धूल का उड़ना शुरू हो जाता है। सड़को में धूल की किड़किड़ाहट भर महसूस होने लगती है। ऐसा लगता है मानो बनारस की जीभ

मे चूल की किड़किड़ाहट महसूस हो रही है। वसंत के आगमन से भिखारियों के कटोरे में वसंत का आगमन होता है अर्थात वसंत में गंगा तट पर खूब भीड़ उमड़ती है और भिखारियों को भीख भी खूब मिलती है। ऐसा लगता है मानो उनको कटोरे में वसंत उतर आया हो। इस तरह से कवि ने बनारस मे वसंत आगमन को ~~दर्शाया~~ दर्शाया है।

9 भाव सौंदर्य – इन पंक्तियों मे विरहणी का ~~दुःख~~ अतृप्ती का वर्णन है। वह कहती है कि प्रेम रोज-रोज नूतन होता जाता है। यह अस्थायी है। वह अपने प्रेमी को जितने बार भी देख ले उसके नयन को तृप्ती नहीं मिलती। वह कहती है कि उसके प्रेमी मे हर बार बदलाव आता है इसलिए वह हमेशा अपने प्रेमी को अपने नयन के सामने पाना चाहती है। वह अपने प्रेमी की मधुर बोली हमेशा सुनना चाहती है। वह जितनी बार भी सुन ले उसे तृप्ती का अनुभव नहीं होता। वह कहती है कि उसके प्रेमी में रोज नए बदलाव आते है। उसकी आवाज़ बदलती रहती है। इसलिए वह चाहती है कि वह आजीवन अपने प्रेमी की आवाज़ सुनते रहे।

शिल्प सौंदर्य – कवि ने बड़े सुन्दर तरीके से विरहणी के अतृप्ती का वर्णन किया। इसमे इन्होंने अलंकारो का प्रयोग किया। भाषा सरल

एवं सुन्दर है। निहारत नयन में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

(ख) भाव सौंदर्य - इन ~~पंक्तियों~~ पंक्तियों में विरहणी का असह्य दुःख का वर्णन है। वह अपने प्रेमी के विरह में मरणासन्न स्थान पर ~~पहुँच~~ पहुँच च गई है। वह अपने विरह में प्रेमी को कहती है कि वह बहुत कमजोर हो गई है। वह मर रही है। उसके तन का सारा रक्त बह गया है। उसका शरीर का सारा मांस गल गया है। हड्डियाँ सुख कर सफेद ~~शं~~ शंख सी दिखाई पड़ रही है। उसकी हालत भी एकदम खराब हो च गई है। वह चाहती है कि उसका प्रेमी उसके पास आए और इसके पंखो को अब समेट ले। नहीं तो वह विरह की आग में जलकर मर जाएगी।

शिल्प सौंदर्य - इन पंक्तियों में कवि ने विरह की भावना को व्यक्त किया है। कवि ने ~~अलंकारों~~ अलंकारों का प्रयोग करके भाषा को सुन्दर बना दिया है। 'सब संख' में अनुप्रास अलंकार है। कवि की भाषा सरल एवं सुन्दर है।

10. प्रसंग – यह प्रसंग हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक 'अंतरा' से ली गई है। यह 'यथास्मै रोचते ~~यथास्मै रोचते~~ विश्वम्' का एक प्रसंग है।

व्याख्या – इस प्रसंग मे ~~कवि के~~ लेखक कवि को प्रजापति का दर्जा देता है। लेखक कहता है कि कवि को प्रजापति का दर्जा इसलिए दिया जाता है क्योंकि वह नई सृष्टि का निर्माण करता है। वह समाज को दर्पण दिखाने के साथ-साथ उसमे बदलाव लाने की कोशिश भी करता है। वह सिर्फ समाज को दर्पण दिखायगा तो वह प्रजापति नही कहलाएगा। कवि का ~~कर्तव्य~~ कर्तव्य है कि वह समाज मे परिवर्तन लाए। कवि को पुरोहित की तरह समाज का नेतृत्व करना होगा तभी वह एक उन्नत समाज का निर्माण करने मे सफल हो सकेगा। उसे समाज के जातीय सम्मान की रक्षा भी करनी होगी। लेखक ने कवि को बहुत बड़ा दर्जा दिया है। उसने कहा है कि कवि मे इतनी ताकत है कि वह समाज को साहित्य द्वारा बदल सकता है।

विशेष – लेखक की भाषा बहुत सरल एवं सुन्दर है। लेखक का भाषा पर पूरा अधिकार है।

11 (ख) बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को अपने मायके मे एक संवाद सुनाने

के लिए भेजा था पर हरगोबिन उसे सुना नहीं पाया। जलालगढ पहुँचकर पहले तो उसे होश नहीं था क्योंकि वह 20 कोस चल कर आया था। फिर वह बड़ी बहुरिया के हाथ से दूध पीकर उसे होश आया। होश में आकर हरगोबिन ने यह संकल्प लिया कि वह बड़ी बहुरिया का पूरा ध्यान रखेगा। वह उनको माँ के समान रखेगा और कहा कि वह उनका बेटा है। वह बड़ी बहुरिया को कहता है कि वह यह गाँव छोड़कर न जाए, वह इस पूरे गाँव की लक्ष्मी है। वह मेहनत करके बड़ी बहुरिया का काम करेगा। उन्हें वो निराश नहीं करेगा। उनका पूरा-पूरा ध्यान रखकर एक अच्छा बेटा बनेगा और उन्हें कोई तकलीफ नहीं होने देगा। इससे हरगोबिन के मन की स्वच्छता का प्रमाण मिलता है। वह बड़ी बहुरिया का बहुत सम्मान करता था और उनसे बहुत प्रेम भी करता था।

(ग) शेर के मुहँ और रोज़गार के ~~दफ्त~~ दफ्तर के बीच यह अंतर है कि शेर के मुहँ में जो जाता है वह ~~का~~ कभी वापस नहीं आता। उसका ~~की~~ अस्तित्व नष्ट हो जाता है। पर रोज़गार के दफ़्तर में भले ही जितने भी चक्कर लगाने पड़े पर वहाँ

से वापस आया जा सकता है।

इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने हमारे समाज की सत्ता की अवस्था पर व्यंग्य किया है। लेखक बताता है कि सत्ता आम लोगों को धोखे में रखकर अपना मुनाफा खाती है। जब तक आम लोग चुप-चाप सहन करते हैं वे खुशी-खुशी शांतिपूर्वक अपना काम करती है पर जब आम लोगों की आँखें खुल जाती हैं और वे सत्ता पर प्रश्न साधने लगती हैं तो वे शेर की तरह दहाड़ने लगते हैं।

भीष्म साहनी

12\. भीष्म साहनी का जन्म रावलपिंडी (अब पाकिस्तान) में हुआ था। उनकी बचपन की स्कूली शिक्षा वहीं हुई फिर वे उच्च शिक्षा ग्रहण करने अंबाला में पंजाब विश्वविद्यालय आ गए। उन्होंने वहाँ अंग्रेजी में एम.ए किया फिर उसके बाद पी.एच.डी की उपाधि ग्रहण कर ली।

उन्होंने कई कई जगह अध्यापन किया। कई पत्र-पत्रिकाओं के लिए आलेख लिखा। वे मुंबई में कई दिनों तक बेरोज़गार भी रहे। फिर वहाँ से दिल्ली के एक विश्वविद्यालय में अध्यापन किया।

इनकी प्रमुख कृत्तियाँ हैं- 'भाग्यरेखा', परिमल, बूँद-बूँद आदि

10

इनकी भाषा मे गांभीर्य, सरलता है। ये बड़े ही सुन्दर लेख लिखते है। इनका भाषा पर पूरा अधिकार है। इनकी लेखन शैली से काफी लोग प्रभावित होते है। वह एक बहुत ही प्रसिद्ध लेखक माने जाते हैं।

सूरदास की झोपड़ी को भैरों ने आग लगा दिया था और उसके जीवन भर कमाई हुई पोटली को भी उड़ा ले गया था। इससे सूरदास बहुत टूट गया था। पर जब घीसू ने मिठुआ को यह बोला कि 'खेल मे कोई रोता है क्या?' यह सुनकर सूरदास का मन बिलकुल एकदम से बदल गया। उसमें हिम्मत आ गई। वह सोचने लगा कि मैं खेल में रोता हूँ, बच्चे भी खेल में रोना को बुरा मानते हैं। तभी उसने अपने आँसू पोंछकर यह संकल्प लिया कि 'चाहे कोई इसे सौ लाख बार जलाए, वह सौ लाख बार बनाएगा।' इससे उसकी दृढ़ता, संवेदना, संघर्ष का पता चलता है। वह संयमशील किस्म का व्यक्ति था। वह हार मानने वालो में से नहीं था। उसमें जिजीविषा की शक्ति थी। उसके अंदर बहुत हिम्मत थी। वह स्वाभिमानी भी था। उसने अपने स्वाभिमान को डिगने नहीं दिया।

13

14 (10)

(ख)

14.(क) अपना मालवा में लेखक को ऐसा लगता है कि हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है। लेखक ने सही ही कहा है। औद्योगीकरण के लिए पर्यावरण का ध्यान नहीं रखा जा रहा है। पेड़ उजाड़ दिए जा रहे हैं। लोगों को बेघर कर दिया जा रहा है। पेड़ काट दिए जाने के कारण पर्यावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा ज्यादा हो जाती है जो पृथ्वी के लिए हानिकारक है। इससे मौसम चक्र बिगड़ जाता है। औद्योगीकरण के कारण औद्योग से निकले दूषित पदार्थ भी प्रकृति को दूषित कर रहे हैं। इसके धुएँ से भी प्रकृति दूषित होती है। इससे पृथ्वी पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यह सिर्फ लोगों, पेड़ों को उजाड़ती है। पृथ्वी की हरियाली को नष्ट कर देती है। इसलिए इसे उजाड़ की अपसभ्यता कहना एकदम सार्थक है।

(ख) शैला और भूप ने बहुत परिश्रम से पहाड़ पर नई जिंदगी की कहानी लिखी। वे दोनों ने अपनी मेहनत से पहाड़ पर एक सफल जिंदगी बिता पाए। उन्होंने वहाँ खेती के लिए एक जगह चुनी। फिर वहाँ पानी की समस्या खड़ी हो गई।

हर जगह बर्फ जमी हुई थी। उन्होंने पानी का प्रबंध एक झरने से करने का सोचा। इसके लिए उनको एक पहाड़ को काटना था। वे दोनों ने मिलकर उस पहाड़ को काट दिया और झरने का मुँह उनकी खेतों की तरफ करने में सफल रहें। इस तरह से उन्होंने संघर्ष करके पहाड़ पर नई जिंदगी की कहानी लिखी।

खण्ड – ख

3. (ख)

महिला – सुरक्षा का ज्वलंत प्रश्न

आज के युग में महिला सुरक्षा एक बहुत विशेष विषय बन चुका है। आज महिला की सुरक्षा देश के लिए एक बहुत अहम् स्थान रखती है।

पहले के युग में जहाँ औरतों को माँ-बहनों का दर्जा दिया जाता था आज उन्हीं का बुरी तरह से मारा-पीटा व गंदी नज़रों से देखा जाता है। जो महिलाए पुरुषों का जन्म देती है वे उन्हीं उनका ही सम्मान करना नहीं जानते। वे उन्हें भी गालियाँ देते हैं। महिला की असुरक्षा का एक महत्त्व कारण

अशिक्षा भी है। जो लोग पढ़े-लिखे होते हैं वे औरतों का सम्मान करना जानते हैं। उन्हें छोटे से ही यह सीख दी जाती है। कुछ लोगों की ही वजह से आज देश की संस्कृति में दाग लग जाता है। ये लोग देश की गरिमा का भंग कर देते हैं। इन्हीं की वजह से कई महिलाएँ आज खुल कर अपनी जिंदगी नहीं जी सकती। लोग अपनी बेटियों को बाहर पढ़ने भेजने के लिए भी डरते हैं। इनके मन में उनकी सुरक्षा को लेकर भय रहता है जो उन्हें इनको आजाद करने से रोकता है। पर यह सिर्फ महिलाओं के साथ ही क्यों? क्यों महिलाओं को बेचारी समझा जाता है? क्यों वह पुरुषों के जुल्मों को सहन करे? आखिर उनको भी जीने का हक है। वे भी देश के नागरिक हैं।

इस समस्या से बाहर निकलने का यह समाधान हो सकता है कि सरकार नियमित रूप से अपना काम करें। वे शिक्षा की ओर अपना जोर लगाए जिसमें कि लोगों को संस्कृति की सीख दी जाती हो। स्त्रियों की सुरक्षा के लिए उन्हें बल का प्रयोग करना भी सिखाया जाए। इसे स्कूल से सिखाना चाहिए। अगर हम इन छोटे-छोटे विषयों पर ध्यान दे तो हम बहुत महिला-सुरक्षा में कामयाब हो सकते हैं।

सेवा मे,
सम्पादक
दैनिक जागरण,
नई दिल्ली

दिनांक - 11/03/2016

विषय - बढ़ती महँगाई पर चिंता और परेशानी हेतु पत्र

महोदय,
मैं एक साधारण नागरिक हूँ और आपको यह पत्र से हमारे बढ़ती महँगाई से आने वाली हमारे जीवन मे परेशानी को व्यक्त करना चाह रही हूँ। हम साधारण जन है। और बढ़ती महंगाई से बहुत परेशान हैं। हमारे लिए दाल-रोटी खानी भी मुश्किल हो रही है। अन्न, दाल की कीमत बढ़ने के कारण हमारा जीना मुश्किल हो गया है। हमारी तनख्वाह इतनी ही है पर दाल-चावल के दाम बढ़ते ही जा रहे हैं। हमें पेट पालना मुश्किल हो रहा है।
आप इस पत्र को पढ़कर अपने समाचार-पत्र में स्थान दे यह मेरी आपसे सविनय निवेदन है। हम इस बढ़ती महंगाई को

रोकने के लिए अन्न का दूसरें देशों में भेजना रोक सकते हैं, इससे हमारे देश में अन्न बचा रहेगा और लोगों तक सस्ते दामों में पहुँचेगा। हम एक स्कीम तैयार कर सकते हैं जिसमें गरीबों व मध्य वर्गीय लोगों को सस्ते दामों में चि चीज़े मिलें।

तो मेरी आपसे सविनय निवेदन हैं कि आप इस ओर ध्यान दें और अपने समाचार पत्र पर प्र प्रकाशित करें।

धन्यवाद।

भवदीया,

क. ख. ग

(एक नागरिक)

(क) जनसंचार के मुख्य मुख्य माध्यम मुद्रित एवं श्रव्य माध्यम हैं। मुद्रित में समाचार पत्र आदि आते हैं और श्रव्य में रेडियो आता हैं। टी.वी, इंटरनेट भी जनसंचार माध्यमों के अंतर अंदर आता है।

(ख) इंटरनेट पत्रकारिता आजकल बहुत लोकप्रिय है क्योंकि यह हमें किसी भी कोने से एकदम ताज़ा खबर प्रदान करती हैं।

यह हमें अपन्डेट रखती है।

(ग) संचार प्रक्रिया में ~~फीड़~~ 'फीड बैक' का बहुत महत्व है। इससे लोगों की रुचि के बारे में पता चलता है। लोगों की सोच का पता चलता है।

(घ) जनसंचार लोगो को शिक्षा, सूचना, ~~य~~ आदि प्रदान करता है। यह समाचार पत्र, टी.वी द्वारा लोगो तक सूचना पहुँचाता है।
जनसंचार लोगों का मनोरंजन भी करता है।

ङ.) ~~(म)~~ समाचार संपादन के सिद्धांत के रुप में 'वस्तुपरकता' का अर्थ है किसी भी समान्य समाचार को देखकर, परखकर एवं अच्छे से समझकर उसका प्रकाशित करना।

गुरु - शिष्य का संबंध

6.
आज के वर्तमान युग में गुरु को सम्मान नहीं दिया जाता पहले का गुरु-शिष्य संबंध बहुत निराला एवं देखने

लायक होता था। शिष्य गुरु की हर बात को पत्थर की लकीर समझकर उसका पालन करता था। महाभारत मे अर्जुन ने अपने गुरु के माँगने पर अपना अँगूठा तक काट कर दे दिया था पर आज के युग के बच्चे अपने गुरु को गालियाँ देते हैं। यहाँ तक कि वे गुरु को मारते भी हैं। गुरु के लिए उनका सम्मान नष्ट होता जा रहा हैं। यह बहुत बड़ी बात हैं। यह एक सोचने का विषय है। जो गुरु अपने शिष्य के लिए इतना कुछ करते हैं, उन्हें हर वह चीज बताते हैं जो उनके उनके भविष्य के लिए जरूरी है आज उसी गुरु की इज्जत नही की जाती हैं। गुरु-शिष्य के अनमोल संबंध को नष्ट कर दिया जा रहा हैं। जो गुरु मार्गदर्शन करता है उसी को गालियाँ दी जाती है। यह एक शर्म की बात है। इसलिए वर्तमान शिक्षा-संस्थाओं में गुरु-शिष्य के परंपरागत आदर्श संबंधो को सुधारने की बहुत जरूरत हैं।

खंड - क

(क) 'संयुक्त परिवार' वह है जिसमें प्रत्येक सदस्य अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त रहता है और परिवार के प्रति सम्मिलित उत्तरदायित्व और एक प्रकार से सामाजिकता का बोध जागृत

करवाता है।

एकल परिवार, वह है जिसमें हर एक सदस्य अपनी ही सोचता है। उसे दूसरे सदस्य की कोई परवाह नहीं होती। उसमें धनलिप्सा, स्वार्थ भावना, सुख-चैन की जिंदगी जीने की लालक होती है।

(ख) संयुक्त परिवार में संस्कार मिलते हैं। सभी अपने सुख-दुख बाँटते हैं। इस परिवार में बचपन, यौवन व बुढ़ापा सभी आनन्द में बीतते हैं। परिवार में परस्पर सद्भावना, सहयोग, प्रेम, त्याग, आदि की भावना होती है।

(ग) संयुक्त परिवारों के टूटने से समाज में भी बिखराव और अलगाव दिखाई पड़ता है। इससे अनुशासन के बंधनों का नाम देकर धीरे-धीरे उच्छृंखलता की ओर ले जाया जा रहा है।

(घ) नई पीढ़ी संयुक्त परिवार में इसलिए नहीं रहना चाहती क्योंकि उनका आकाश बहुत विस्तृत है। उसे पाने के लिए उसे पुरातनता सहायक नहीं लगती। उनमे विचारों का संघर्ष है और आकर्षणों का दबाव है। इनमे सुखी जिंदगी

(ङ)

(च)

(छ)

(ज)

जीने की ललक है और स्व की भावना है।

(ङ) व्यक्ति, परिवार और समाज के बीच अलगाव पैदा हो रहे हैं। संयुक्त परिवार के टूटने से परिवारों में बिखराव आ जाता है। चूँकि व्यक्ति परिवार की और परिवार समाज की इकाई है, इसलिए परिवारों के टूटने से समाज में भी बिखराव और अलगाव दिखाई पड़ रहा है।

(च) नई पीढ़ी का आकाश बहुत विस्तृत है। से आशय यह है कि वर्तमान युग के लोगों का अरमान बहुत बड़ा है। वे ऊँचाईयों को छूना चाहते हैं।

(छ) दोनो पीढ़ियों मे सामंजस्य तभी संभव है जब ये लोग एक दूसरे की भावना का सम्मान करेंगे। एक दूसरे को समझेंगे। आपस में प्रेम की भावना रखेंगे।

(ज) संयुक्त परिवार — खुशहाल परिवार।

2. (क) हमें अपने पूर्वजों का अनुसरण इसलिए करना चाहिए क्योंकि वे हमारा मार्गदर्शन करते है और हमें उनका गौरव को बढ़ाना चाहिए।

(ख) कवि देश के सभी बंधुओं का आह्वान एक शांतिमय उद्देश्य का साधक बनने के लिए कर रहा है।

(ग) माला के उदाहरण से कवि एकता को प्रतिपादित कर रहा है।

(घ) हमें इन सब को छोड़कर विवेकता दिखाने की प्रेरणा दी गई है। यह सब सिर्फ अंधविश्वास है।

(ङ) इसका आशय यह है कि सिर्फ मुख से ही नहीं बल्कि कर्म करके देश की ~~उन्नति~~ उन्नती करो।